'Environmental Impact Assessment - A Journey to Sustainable Development' released by Prof. Tankeshwar Kumar

Central University of Haryana

NAAC Accredited 'A' Grade University

Public Relations Office

Newspaper: Aaj Samaj **Date: 05-09-2024**

एनवायरनमेंट इम्पैक्ट असेसमेन्ट-ए जर्नी टू सस्टैनबल डेवलपमेंट पुस्तक का हकेवि कुलपति ने किया विमोचन

पुस्तक का विमोचन करते कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार।

महेंद्रगढ़। हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेवि), महेंद्रगढ़ में पर्यावरण अध्ययन विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. मोना शर्मा की पुस्तक ह्यएनवायरनमेंट इम्पैक्ट असेसमेन्ट-ए जर्नी टू सस्टैनबल डेवलपमेंटह्य का विमोचन बुधवार को विश्वविद्यालय कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार ने किया। पुस्तक का प्रकाशन स्प्रिंगर द्वारा किया गया है तथा यह भारतीय लेखकों की स्प्रिंगर द्वारा प्रकाशित पहली पुस्तक है। प्रो. टंकेश्वर कुमार ने पुस्तक की प्रस्तावना में उल्लेख किया है कि यह पुस्तक यह जानने के लिए एक मार्गदर्शिका है कि पर्यावरणीय प्रभाव आकलन (ईआईए) कैसे काम करता है और सतत विकास प्राप्त करने के लिए वे कितने महत्वपूर्ण हैं।

कुलपति ने लेखकों को पुस्तक प्रकाशन के लिए बधाई दी और लेखकों की मेहनत व समर्पण हर्ष व्यक्त करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। डॉ. मोना शर्मा ने बताया कि पुस्तक में ईआईए के तरीकों और रूपरेखाओं के बारे में विस्तार से बताया गया है। इस पुस्तक में उन समस्याओं को भी वर्णित किया गया है। जिनका सामना ईआईए को करना पड़ रहा है। साथ ही उनके समाधान के सर्वोत्तम तरीकों तथा वैश्विक सतत लक्ष्यों के संदर्भ में उनके भविष्य के बारे में भी बताया गया है। उन्होंने बताया कि डॉ. रचना भटेरिया, डॉ. रिम्मी सिंह और श्री सुमित कुमार पुस्तक के अन्य लेखक हैं। विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ इंटरडिसिप्लिनरी एंड एप्लाइड साइंसेज के डीन प्रो. दिनेश गुप्ता ने बधाई देते हुए कहा कि यह पुस्तक पर्यावरण के क्षेत्र में पेशेवरों, शिक्षाविदों और नीति निमार्ताओं के लिए संदर्भ के रूप में उपयोगी होगी। यह प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा और विकास लक्ष्यों को पूरा करने के लिए ईआईए का उपयोग जानने में भी मददगार होगी। प्रो. नीलम सांगवान ने यह भी कहा कि यह पुस्तक ऐसे समय में सतत विकास के बारे में बातचीत को आगे बढ़ाती है, जब पर्यावरण के मुद्दे अधिक महत्वपूर्ण होते जा रहे हैं। इस अवसर पर डॉ. अनीता सिंह, डॉ. विक्रम सिंह, डॉ. अनूप यादव और डॉ. भूपेंद्र पी. सिंह भी उपस्थित रहे।

Central University of Haryana

NAAC Accredited 'A' Grade University

Public Relations Office

Newspaper: Dainik Chetna **Date: 05-09-2024**

हकेवि कुलपति ने किया 'एनवायरनमेंट इम्पैक्ट असेसमेन्ट-ए जर्नी टू सस्टैनबल डेवलपमेंट' पुस्तक का विमोचन

महेन्द्रगढ़। चेतना ब्यूरो।

हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेवि), महेंद्रगढ़ में पर्यावरण अध्ययन विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. मोना शर्मा की पुस्तक 'एनवायरनमेंट इम्पैक्ट असेसमेन्ट-ए जर्नी टू सस्टैनबल डेवलपमेंट' का विमोचन बुधवार को विश्वविद्यालय कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार ने किया। पुस्तक का प्रकाशन स्प्रिंगर द्वारा किया गया है तथा यह भारतीय लेखकों की स्प्रिंगर द्वारा प्रकाशित पहली पुस्तक है। प्रो. टंकेश्वर कुमार ने पुस्तक की प्रस्तावना में उल्लेख किया है कि यह पुस्तक यह जानने के लिए एक मार्गदर्शिका है कि पर्यावरणीय प्रभाव आकलन (ईआईए) कैसे काम करता है और सतत विकास प्राप्त करने के लिए वे कितने महत्वपूर्ण हैं। कुलपति ने लेखकों को पुस्तक प्रकाशन के लिए बधाई दी और लेखकों की मेहनत व समर्पण हर्ष व्यक्त करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। डॉ. मोना शर्मा ने बताया कि पुस्तक में ईआईए के तरीकों और रूपरेखाओं के बारे में विस्तार से बताया गया है। इस पुस्तक में उन समस्याओं को भी वर्णित किया गया है। जिनका सामना ईआईए को करना पड़ रहा है। उन्होंने बताया कि डॉ. रचना भटेरिया, डॉ. रिम्मी सिंह और श्री सुमित कुमार पुस्तक के अन्य लेखक हैं। विश्वविद्यालय के स्कूल

ऑफ इंटरडिसिप्लिनरी एंड एप्लाइड साइंसेज के डीन प्रो. दिनेश गुप्ता ने बधाई देते हुए कहा कि यह पुस्तक पर्यावरण के क्षेत्र में पेशेवरों, शिक्षाविदों और नीति निर्माताओं के लिए संदर्भ के रूप में उपयोगी होगी। यह प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा और विकास लक्ष्यों को पूरा करने के लिए ईआईए का उपयोग जानने में भी मददगार होगी। प्रो. नीलम सांगवान ने यह भी कहा कि यह पुस्तक ऐसे समय में सतत विकास के बारे में बातचीत को आगे बढ़ाती है, जब पर्यावरण के मुद्दे अधिक महत्वपूर्ण होते जा रहे हैं। इस अवसर पर डॉ. अनीता सिंह, डॉ. विक्रम सिंह, डॉ. अनूप यादव और डॉ. भूपेंद्र पी. सिंह भी उपस्थित रहे।

Central University of Haryana

NAAC Accredited 'A' Grade University

Public Relations Office

Newspaper: Dainik Jagran **Date: 05-09-2024**

'प्राकृतिक संसाधन की रक्षा की प्रेरणा देती है मोना की पुस्तक'

पुस्तक का विमोचन करते कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार ● सौजन्यः हकेंवि

संवाद सहयोगी, जागरण ● महेंद्रगढ़: हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेंवि), महेंद्रगढ़ में पर्यावरण अध्ययन विभाग की विभागाध्यक्ष डा. मोना शर्मा की पुस्तक 'एनवायरनमेंट इम्पेक्ट असेसमेन्ट-ए जर्नी टू सस्टेनेबल डवलपमेंट' का विमोचन बुधवार को विश्वविद्यालय कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार ने किया। पुस्तक का प्रकाशन स्प्रिंगर द्वारा किया गया है तथा यह भारतीय लेखकों की स्प्रिंगर द्वारा प्रकाशित पहली पुस्तक है। प्रो. टंकेश्वर कुमार ने पुस्तक की प्रस्तावना में उल्लेख किया है कि यह पुस्तक यह जानने के लिए एक मार्गदर्शिका है कि पर्यावरणीय प्रभाव आकलन (ईआइए) कैसे काम करता है और सतत विकास प्राप्त करने के लिए वे कितने महत्वपूर्ण हैं।

डा. मोना शर्मा ने बताया कि पुस्तक में रूपरेखाओं के बारे में बताया गया है। उन्होंने बताया कि डा. रचना भटेरिया, डा. रिम्मी सिंह और श्री सुमित कुमार पुस्तक के अन्य लेखक हैं। विश्वविद्यालय के स्कूल आफ इंटरडिसिप्लिनरी एंड एप्लाइड साइंसेज के डीन प्रो. दिनेश गुप्ता ने बधाई देते हुए कहा कि यह पुस्तक पर्यावरण के क्षेत्र में पेशेवरों, शिक्षाविदों और नीति निर्माताओं के लिए संदर्भ के रूप में उपयोगी होगी। यह प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा और विकास लक्ष्यों को पूरा करने के लिए ईआइए का उपयोग जानने में भी मददगार होगी। इस अवसर पर डा. अनीता सिंह, डा. विक्रम सिंह, डा. अनूप यादव और डा. भूपेंद्र पी. सिंह भी उपस्थित रहे।

Central University of Haryana

NAAC Accredited 'A' Grade University

Public Relations Office

Newspaper: Hello Rewari **Date: 05-09-2024**

कुलपति ने किया 'एनवायरनमेंट इम्पैक्ट असेसमेन्ट- ए जर्नी टू सस्टैनबल डेवलपमेंट' पुस्तक का विमोचन

-भारतीय लेखकों की स्प्रिंगर द्वारा प्रकाशित पहली पुस्तक

हैलो रेवाड़ी संवाददाता

महेंद्रगढ़। हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय महेंद्रगढ़ में पर्यावरण अध्ययन विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. मोना शर्मा की पुस्तक 'एनवायरनमेंट इम्पैक्ट असेसमेन्ट-ए जर्नी टू सस्टैनबल डेवलपमेंट' का विमोचन बुधवार को विश्वविद्यालय कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार ने किया। पुस्तक का प्रकाशन स्प्रिंगर द्वारा किया गया है तथा यह भारतीय लेखकों की स्प्रिंगर द्वारा प्रकाशित पहली पुस्तक है। प्रो. टंकेश्वर कुमार ने पुस्तक की प्रस्तावना में उल्लेख किया है कि यह पुस्तक यह जानने के लिए एक मार्गदर्शिका है कि पर्यावरणीय प्रभाव आकलन (ईआईए) कैसे काम करता है और सतत विकास प्राप्त करने के लिए वे कितने महत्वपूर्ण हैं। कुलपति ने लेखकों को पुस्तक प्रकाशन के लिए बधाई दी और लेखकों की मेहनत व समर्पण हर्ष व्यक्त करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। डॉ. मोना शर्मा ने बताया कि पुस्तक में ईआईए के तरीकों और रूपरेखाओं के बारे में विस्तार से बताया गया है। इस पुस्तक में उन समस्याओं को भी वर्णित किया गया है। जिनका सामना ईआईए को करना पड़ रहा है। साथ ही उनके समाधान के सर्वोत्तम तरीकों तथा वैश्विक सतत लक्ष्यों के संदर्भ में उनके भविष्य के बारे में भी बताया गया है। उन्होंने बताया कि डॉ. रचना भटेरिया, डॉ. रिम्मी सिंह और श्री सुमित कुमार पुस्तक के अन्य लेखक हैं। विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ इंटरडिसिप्लिनरी एंड एप्लाइड साइंसेज के डीन प्रो. दिनेश गुप्ता ने बधाई देते हुए कहा कि यह पुस्तक पर्यावरण के क्षेत्र में पेशेवरों, शिक्षाविदों और नीति निर्माताओं के लिए संदर्भ के रूप में उपयोगी होगी। यह प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा और विकास लक्ष्यों को पूरा करने के लिए ईआईए का उपयोग जानने में भी मददगार होगी। प्रो. नीलम सांगवान ने यह भी कहा कि यह पुस्तक ऐसे समय में सतत विकास के बारे में बातचीत को आगे बढ़ाती है, जब पर्यावरण के मुद्दे अधिक महत्वपूर्ण होते जा रहे हैं। इस अवसर पर डॉ. अनीता सिंह, डॉ. विक्रम सिंह, डॉ. अनूप यादव और डॉ. भूपेंद्र पी. सिंह भी उपस्थित रहे।

Central University of Haryana

NAAC Accredited 'A' Grade University

Public Relations Office

Newspaper: Impressive Times **Date: 05-09-2024**

Environmental Impact Assessment - A Journey to Sustainable Development' released by Prof. Tankeshwar Kumar

TIT Correspondent
info@impressivetimes.com

MAHENDERGARH : Dr. Mona Sharma, Head, Department of Environmental Studies, Central University of Haryana (CUH), Mahendergarh is set to unveil her much-anticipated text book entitled "Environmental Impact Assessment - A Journey to Sustainable Development" published by Springer. This book has been released by Vice Chancellor, Prof. Tankeshwar Kumar. Prof. Tankeshwar Kumar mentioned in his foreword of the book that this book is a complete guide for learning how environmental impact assessments (EIA) work and how important they are for achieving sustainable development. This book is a great resource for students, professionals, and anyone else interested in environmental management because it goes into great depth about different case studies, regulatory landscapes, and how EIA is used in policymaking. Prof. Tankeshwar Kumar congratulated the authors on the publication of their first Springer text book on "Environmental Impact Assessment" and said this is a remarkable achievement, and I'm thrilled to see their hard work and talent come to fruition. Authors dedication is evident in this impressive work, and I'm confident that it will resonate deeply with readers. Further, he wished for continued success and many more accomplishments in the future to authors. Dr. Mona Sharma, one of the authors highlighted the book goes into detail about the methods and frameworks of EIAs and shows how they can help make sure that growth projects leave as little of an impact on the environment as possible. It talks about the problems that EIAs are facing now, the best ways to do them, and their future in the context of global sustainable goals. She mentioned that Dr Rachna Bhateria, Dr Rimmy Singh, and Mr. Sumit Kumar are other authors of the book and it is a joint work by experts in the field, and it gives readers a lot of different ideas and useful information. She told that the book "Environmental Impact Assessment - A Journey to Sustainable Development" is both an academic guide and a story about how sustainable practices have changed over time in modern development. The book focusses on using EIAs in the real world and stresses how important they are for promoting responsible growth that is in line with protecting the environment. Prof. Dinesh Gupta, Dean, School of Interdisciplinary and Applied Sciences congratulated the author and said this book will be helpful for professionals in the field of the environment, academics, and policymakers as a reference and helping people learn more about how EIAs can be used to protect natural resources and meet development goals. Prof. Neelam Sangwan also said that this book adds to the conversation about sustainable growth at a time when environmental issues are becoming more important.